कथा सरिता

हे ईश्वर! तुम्हारा धन्यवाद

एक जादूगर जो मृत्यु के करीब था, मृत्यु से पहले अपने बेटे को चाँदी के सिक्कों से भरा थैला देता है और बताता है कि 'जब भी इस थैले से चाँदी के सिक्के खत्म हो जाएँ तो मैं तुम्हें एक प्रार्थना बताता हूँ, उसे दोहराने से चाँदी के सिक्के फिर से भरने लग जाएंगे।'

उसने बेटे के कान में चार शब्दों की प्रार्थना कही और वह मर गया। अब बेटा चाँदी के सिक्कों से भरा थैला पाकर आनंदित हो उठा और उसे खर्च करने में लग गया। वह थैला इतना बड़ा था कि उसे खर्च करने में कई साल बीत गए, इस बीच वह प्रार्थना भूल गया। जब थैला खाली होने को आया तब उसे याद आया कि 'अरे! वह चार शब्दों की प्रार्थना क्या थी।' उसने बहुत याद किया, पर उसे याद ही नहीं आया।

अब वह लोगों से पूछने लगा। पहले पड़ोसी से पूछता है कि 'ऐसी कोई प्रार्थना तुम जानते हो क्या, जिसमें चार शब्द हैं?' पड़ोसी ने कहा, 'हाँ, एक चार शब्दों की प्रार्थना मुझे मालूम है, ईश्वर मेरी मदद करो।' उसने सुना और उसे लगा कि ये वे शब्द नहीं थे, कुछ अलग थे। कुछ सुना होता है तो हमें जाना-पहचाना सा लगता है। फिर भी उसने वह शब्द बहुत बार दोहराए, लेकिन चाँदी के सिक्के नहीं बढ़े तो वह बहुत दु:खी हुआ। फिर एक फादर से मिला, उन्होंने बताया कि 'ईश्वर तुम महान हो।' ये चार शब्दों की प्रार्थना हो सकती है, मगर इसके दोहराने से भी थैला नहीं भरा। वह एक नेता से मिला, उसने कहा 'ईश्वर को वोट दो।' यह प्रार्थना भी कारगर साबित नहीं हुई।

वह बहुत उदास हुआ। उसने सभी से पूछकर देखा, मगर उसे वह प्रार्थना नहीं मिली, जो पिताजी ने बताई थी।

वह उदास होकर घर में बैठा हुआ था तब एक भिखारी उसके दरवाज़े पर आया। उसने कहा, 'सुबह से कुछ नहीं खाया, खाने के लिए कुछ हो तो दो।' उस लड़के ने बचा हुआ खाना भिखारी को दे दिया। उस भिखारी ने खाना खाकर बर्तन वापस लौटाया और ईश्वर से प्रार्थना की, 'हे ईश्वर! तुम्हारा धन्यवाद।' अचानक वह चौंक पड़ा और चिल्लाया कि 'अरे! यही तो वह चार शब्द थे।' उसने वे शब्द दोहराने शुरू किए- 'हे ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद'.....और उसके सिक्के बढ़ते गए... बढ़ते गए... इस तरह उसका पूरा थैला भर गया।

इससे आप भी समझें कि जब उसने किसी की मदद की तब उसे वह मंत्र फिर से मिल गया। 'हे ईश्वर! तुम्हारा धन्यवाद।' यही उच्च प्रार्थना है, क्योंकि जिस चीज़ के प्रति हम धन्यवाद देते हैं, वह चीज़ बढ़ती है। अगर पैसे के लिए धन्यवाद देते हैं तो पैसा बढ़ता है, प्रेम के लिए धन्यवाद देते हैं तो प्रेम बढ़ता है। ईश्वर या गुरूजी के प्रति धन्यवाद के भाव निकलते हैं कि ऐसा ज्ञान सुनने तथा पढ़ने का मौका हमें प्राप्त हुआ है।

बिना किसी प्रयास से यह ज्ञान हमारे जीवन में उतर रहा है, वर्ना ऐसे अनेक लोग हैं, जो झूठी मान्यताओं में जीते हैं और उन्हीं मान्यताओं में ही मरते हैं। मरते वक्त भी उन्हें सत्य का पता नहीं चलता। उसी अंधेरे में जीते हैं, मरते हैं।

आइए, हम सब मिलकर एक साथ धन्यवाद दें उस ईश्वर को, जिसने हमें मनुष्य जन्म दिया और उसमें दी दो बातें - पहली 'साँस का चलना', दूसरी 'सत्य की प्यास।' यही प्यास हमें खोजी से ज्ञानी बनाएगी।

ज्ञान और सद्भाव से मिलेगा आनंद और परम आनंद।

वो उधार के 100 रुपये

बाहर बारिश हो रही थी, और अन्दर क्लास चल रही थी।

तभी टीचर ने बच्चों से पूछा - 'अगर तुम सभी को 100-100 रुपये दिए जाएं तो तुम सब क्या-क्या खरीदोगे?'

किसी ने कहा - मैं वीडियो गेम खरीदूंगा। किसी ने कहा - मैं क्रिकेट का बैट खरीदूंगा। किसी ने कहा - मैं अपने लिए प्यारी सी गुड़िया खरीदूंगी। तो, किसी ने कहा - मैं बहुत सी चॉकलेट्स खरीदूंगी।

एक बच्चा कुछ सोचने में डूबा हुआ था।

टीचर ने उससे पुछा - 'तुम क्या सोच रहे हो, तुम क्या खरीदोगे?'

बच्चा बोला- 'टीचर जी, मेरी माँ को थोड़ा कम दिखाई देता है, तो मैं अपनी माँ के लिए एक चश्मा खरीदूंगा!'

टीचर ने पूछा- 'तुम्हारी माँ के लिए चश्मा तो तुम्हारे पापा भी खरीद सकते हैं, तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं खरीदना?'

बच्चे ने जो जवाब दिया उससे टीचर का भी गला भर आया!

बच्चे ने कहा- 'मेरे पापा अब इस दुनिया में नहीं हैं। मेरी माँ लोगों के कपड़े सिलकर मुझे पढ़ाती है, और कम दिखाई देने की वजह से वो ठीक से कपड़े नहीं सिल पाती है, इसीलिए मैं मेरी माँ को चश्मा देना चाहता हूँ, ताकि मैं अच्छे से पढ़ सकूँ, बड़ा आदमी बन सकूँ और माँ को सारे सुख दे सकूँ।'

टीचर- 'बेटा, तेरी सोच ही तेरी कमाई है! ये 100 रुपये मेरे वादे के अनुसार और ये 100 रुपये और उधार दे रहा हूँ। जब कभी कमाओ तो लौटा देना। और मेरी इच्छा है, तू इतना बड़ा आदमी बने कि तेरे सर पे हाथ फेरते वक्त मैं धन्य हो जाऊँ !'

20 वर्ष बाद..... बाहर बारिश हो रही है, और अंदर क्लास चल रही है। अचानक स्कूल के आगे जिला कलेक्टर की बत्ती वाली गाड़ी आकर रुकती है। स्कूल स्टाफ चौकन्ना हो जाता है। स्कूल में सन्नाटा छा जाता है।

मगर ये क्या? जिला कलेक्टर एक वृद्ध टीचर के पैरों में गिर जाते हैं, और कहते हैं- 'सर, मैं...उधार के 100 रुपये लौटाने आया हूँ !'

पूरा स्कूल स्टाफ स्तब्ध!

वृद्ध टीचर झुके हुए नौजवान कलेक्टर को उठाकर भुजाओं में कस लेता है और रो पड़ता है।

दोस्तों...

मशहूर हो, मगरूर मत बनना,
साधारण हो, कमज़ोर मत बनना,
वक़्त बदलते देर नहीं लगती,
शहंशाह को फ़कीर, और फ़क़ीर को
शहंशाह बनते देर नहीं लगती...।

क्या लिया और क्या दिया...!

एक अफ्रीकी पर्यटक ऐसे शहर में आया जो शहर उधारी में डूबा हुआ था! पर्यटक ने 1000रु. होटल (जिसमें छोटा सा रेस्टोरेंट भी था) के काउंटर पर रखे और कहा कि मैं जा रहा हूँ कमरा पसंद करने। होटल का मालिक फ़ौरन भागा घी वाले के पास और उसको 1000रु. देकर घी का हिसाब चुकता कर लिया।

घी वाला भागा दूध वाले के पास और जाकर 1000रु. देकर दूध का हिसाब पूरा करा लिया। दूध वाला भागा गाय वाले के पास और गाय वाले को 1000रु. देकर दूध का हिसाब पूरा करा दिया। गाय वाला भागा चारे वाले के पास और चारे के खाते में 1000रू कटवा आया। चारे वाला गया उसी होटल पर! वो वहां कभी-कभी उधार में रेस्टोरेंट में खाना खाता था। 1000रु. देके हिसाब चुकता किया। पर्यटक वापस आया और यह कहकर अपना 1000रु. ले गया कि उसे कोई कमरा पसंद नहीं आया!

न किसी ने कुछ लिया
न किसी ने कुछ दिया।
सबका हिसाब चुकता!

बताओ गड़बड़ कहाँ है?

कहीं गड़बड़ नहीं है, बल्कि यह सभी की गलतफहमी है कि रुपये हमारे हैं। खाली हाथ आये थे, खाली हाथ ही जाना है।

ज़रा गौर से इस बात पर विचार करें और जीवन का सही रूप से आनंद लें।

नई दिल्ली-पाण्डव भवन। शिव जयंती के अवसर पर ध्वजारोहण से पूर्व ईश्वरीय स्मृति में दिल्ली हाईकोर्ट जस्टिस दीपा शर्मा, ब्र.कु. पुष्पा बहन, निगम पार्षद सुलक्षणा शिन्दी तथा अन्य।

पटना सिटी-विहार। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित शोभा यात्रा का शुभारंभ करते हुए मेयर बहन सीता साहू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अर्चना, ब्र.कु. चंचल भाई , ब्र.कु. मनीष तथा अन्य।

बिसौली-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर ध्वजारोहण के पश्चात् एस.डी.एम. मोहम्मद अवेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथलेश।

सुंदरबनी-जम्मू कश्मीर। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित शिव संदेश शोभा यात्रा का शुभारंभ करने के पश्चात् तहसीलदार विजय कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

कासगंज-उ.प्र.। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रामीण बैंक प्रबंधक महेश चन्द्र एवं अधिकारी संतोष कुमार को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथलेश बहन।

जयपुर-भवानी नगर। सनराईज़ स्कूल के वार्षिकोत्सव में मेहरूनिशा टांक,अध्यक्षा,मदरसा बोर्ड राजस्थान सरकार ब्र.कु. हेमा तथा ब्र.कु. कविता को सम्मानित करते हुए।